पेज - (1) किलका पटेल (हिन्दी विभाग)
B.A. III वैशाली महिला कॉलेज हाजीपुर
दिनांक - 16.05.2020

प्रश्न - विट्ठलदास एक निःस्वार्थी समाज-सेवक हैं? इस उक्ति पर अपना मत दीजिए और विट्ठलदास का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर - सेवासदन उपन्यास में विट्ठलदास का चरित्र-चित्रण एक निःस्वार्थी समाज-सेवक का है। जहाँ तक समाज सेवा का प्रश्न है, विट्ठलदास एकमात्र ऐसे पात्र हैं जिन्हें समाज सेवा की धुन है। उपन्यासकार ने उनका परिचय देते हुए लिखता है —
" बाबू विट्ठलदास शहर की सभी सार्वजनिक संस्थाओं के प्राण थे। उनकी सहायता के बिना कोई कार्य सिद्ध न होता था। वह पुरुषार्थ का पुतला इस भारी

पेज - ②

बोझ को प्रसन्नचित्त उठाता। दब जाता था, किन्तु हिम्मत न हारता था। भोजन करने का अवकाश न मिलता, घर पर बैठना नसीब न होता, स्त्री उनको स्नेह - रहित व्यवहार की शिकायत किया करती। विट्ठलदास जाति सेवा की धुन में अपने सुख और स्वार्थ को भूल गए थे। कहीं अनाथालय के लिए चंदा एकत्र करते फिरते हैं, कहीं दीन विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति का प्रबन्ध करने में दत्त - चित्त हैं। जब देश पर कोई संकट आता तो उनका देशप्रेम उमड़ पड़ता था। अकाल के समय सिर पर आटे का गट्ठर लादे गाँव - गाँव घूमते थे। हैजे और प्लेग के दिनों में उनका आत्म समर्पण और विलक्षण त्याग देखकर आश्चर्य होता था। अभी पिछले दिनों जब गंगा में बाढ़ आयी

Scanned with CamScanner

भी तो महीनों घर की सूरत नहीं देखी, अपनी सारी संपत्ति देश पर अर्पण कर चुके थे, पर इसका तनिक भी अभिमान न था। उन्होंने उच्च शिक्षा नहीं पायी थी। वाकशक्ति भी साधारण थी। उनके विचार में बहुधा प्रौढ़ता तथा दूरदर्शिता का अभाव होता था। एक विशेष नीतिकुशल, चतुर या बुद्धिमान न थे पर उनमें देशानुराग का ऐसा गुण था, जो उन्हें सारे नगर में सर्वमान्य बनाए हुए था।
विट्ठलदास सुधार व्यक्ति है और है सिद्धान्त के पक्के। पं० पद्मसिंह शर्मा विट्ठलदास के अभिन्न मित्र है। लेकिन सिद्धान्त के आगे मित्रता को वे तुच्छ समझते है। पं० पद्मसिंह के घर भोलाबाई का नाच हुआ इसे

विट्ठलदास सह नहीं सके। यहाँ हम देखते हैं कि उनका क्रोध उचित था लेकिन विवेकशून्य था। क्रोध में वे पद्मसिंह को बदनाम करने से भी नहीं चूकते।

विट्ठलदास के हिताहित-ज्ञानशून्य प्रचार का परिणाम यह हुआ कि सुमन वेश्या बन गयी। उन्होंने इस कुपरिणाम का अनुमान भी न किया था। पद्मसिंह के पत्र ने ताड़ना का काम किया, विट्ठलदास को सच्चा दुःख हुआ। "पत्र पढ़ा तो एक थप्पड़-सा लगा। उस पत्र में कितना व्यंग्य था, इसकी ओर उन्होंने कुछ ध्यान नहीं दिया। अपने परम मित्र को भ्रम में पड़कर बदनाम किया, उसका भी दुःख नहीं हुआ। वह बीती हुई बातों पर पछताना न जानते थे।"